पाठ 7. उड़ना आया

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में तदनुरूपता संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे अपरिचित परिस्थितियों में जीवन को समझने में सक्षम हो सकें। हरिवंशराय बच्चन द्वारा लिखित यह कविता जीवन का संदेश देती है। चिड़िया के बच्चे के माध्यम से कवि ने जीवन में आगे बढ़ने के लिए जिन अनुभवों की आवश्यकता होती है, उनकी ओर इशारा किया है।

पाठ का सार

चुरूगन अर्थात् चिड़िया का बच्चा अपने आसपास का वातावरण देखता है तथा बार-बार अपनी माँ से पूछता है कि क्या अब वह उड़ना जान गया है। उसकी माँ उसे मना कर देती है। वास्तव में, जो जीवन के खतरे उठाने के लिए हमेशा तैयार रहता है, वही जीवन को जीना जानता है। एक दिन चुरूगन के दिल से आवाज़ आती है कि वह उड़कर आसमान को चूम ले, तब उसकी माँ कहती है कि आज वास्तव में उसे उड़ना आ गया। उसी का जीवन सफल माना जाता है जो जीवन में खतरों का मुकाबला साहस से करता है।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  चिड़ियाँ, घोंसला आदि के बारे में चर्चा करें। नन्ही चिड़िया का तुलनात्मक अध्ययन छोटे-छोटे बच्चों से किया जा सकता है। चिड़ियों में आत्मनिर्भरता कब आती है, यह बतलाएँ। कविता का सस्वर वाचन करवाएँ। लय में वाचन हो तो पाठ स्वत: याद हो जाता है।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 42** देखें।
  - वाक्य में क्रिया कई रूपों में प्रयुक्त होती है। यह उदाहरण देकर समझाएँ। बच्चों से वाक्य बनवाकर क्रिया के रूपों के बारे में बताया जा सकता है।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - चिड़ियों से संबंधित इन क्रियाकलापों को करने-करवाने के बाद बच्चों से कहें कि वे अपने अनुभव एक-दूसरे से बाँटें।